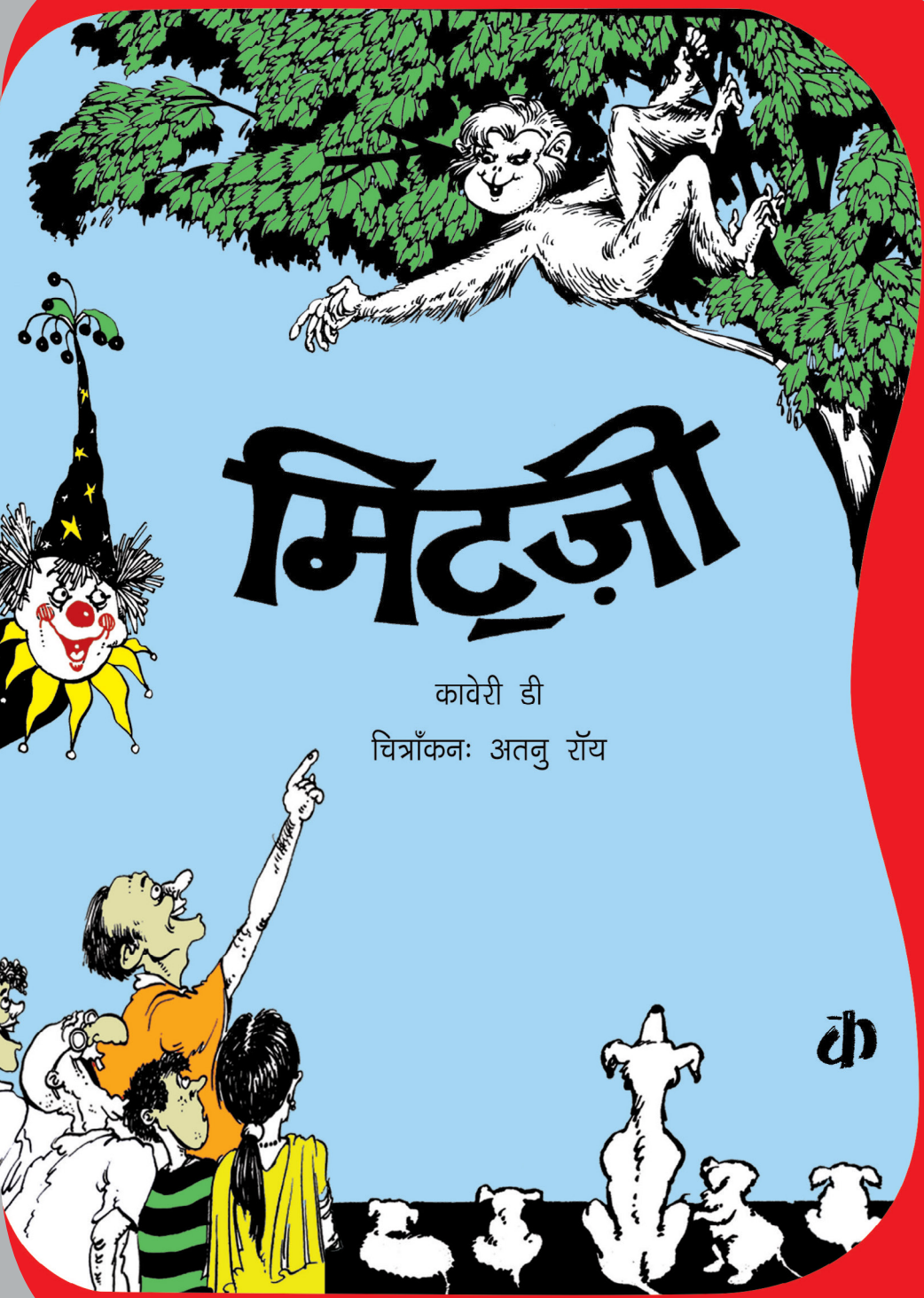

मिट्ठूजी

कावेरी डी

चित्रांकनः अतनु रॉय

यह किताब

....

की है

इस किताब के प्रकाशन में सहायता के लिए कथा

कॉगनिज़ेंट फाउण्डेशन,

चेन्नई की आभारी है।

v/;kid@v/;kfidkvk dk fy,

cM mnn'; Ük[kyk – इस श्रृंखला की पुस्तकों में कहानियों द्वारा बच्चों को अपने वातावरण, जीवन और भविष्य के प्रति सजग एवं सक्रिय होने की प्रेरणा दी जा रही है।

feV th जगाती है मानव और प्रकृति के अटूट बंधन और सच्ची दोस्ती को। इस कहानी की सरल एवं काव्यात्मक शैली पर बच्चों का ध्यान आकर्षित करें। पर्यायवाची शब्दों का बोध कराएँ।

मिट्ज़ी

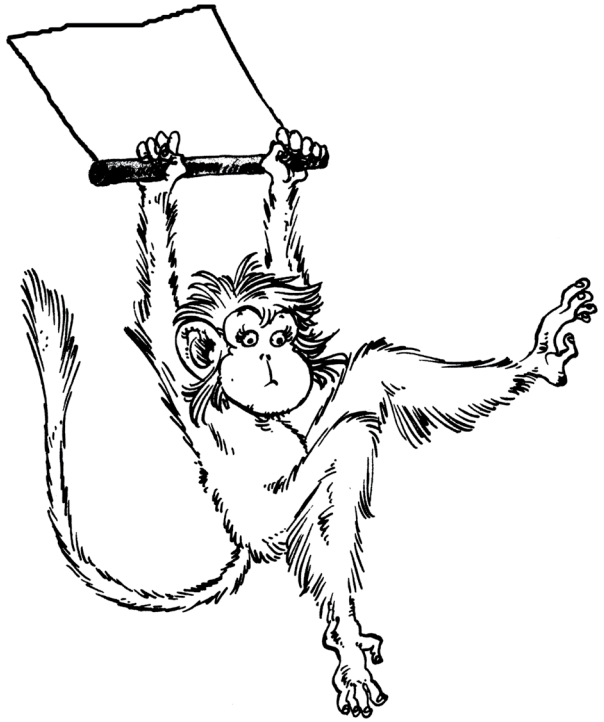

कावेरी डी

चित्राँकनः अतनु राय

कथा

उसका नाम मिट्ज़ी था। मिट्ज़ी को अपना नाम पसन्द था और शहतूत का वह पेड़ भी, जहाँ पर वह रहती थी।

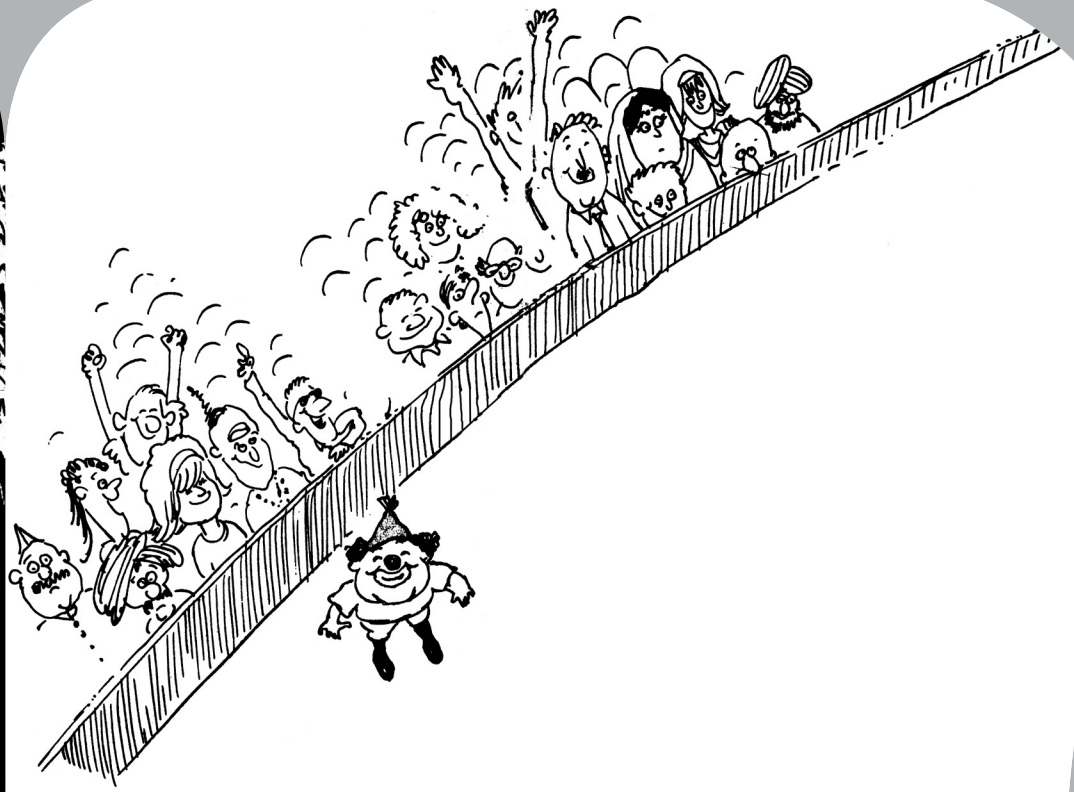

एक दिन मिट्ज़ी के गाँव में मिनमिनी सर्कस आया।

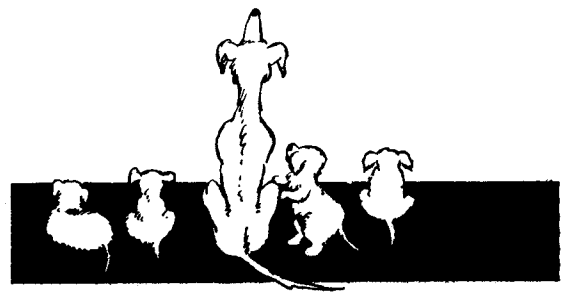

एक अंधा भिखारी, जो दिन भर गाता रहता था, वह भी वहाँ आया।

उसकी आवाज़ मिट्ज़ी को नन्हे पत्थरों पर कलकल बहती नदियों की, ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों से हँसते-कूदते झरनों की और पेड़ों के बीच सरसराती हवा की याद दिलाती थी।

एक दिन भिखारी ने मिट्ज़ी को पुकारा “बंदरिया!” फिर अपने हाथ से बासी रोटी का एक टुकड़ा, उसकी ओर प्यार से बढ़ा दिया। दोनों दोस्त बन गए।

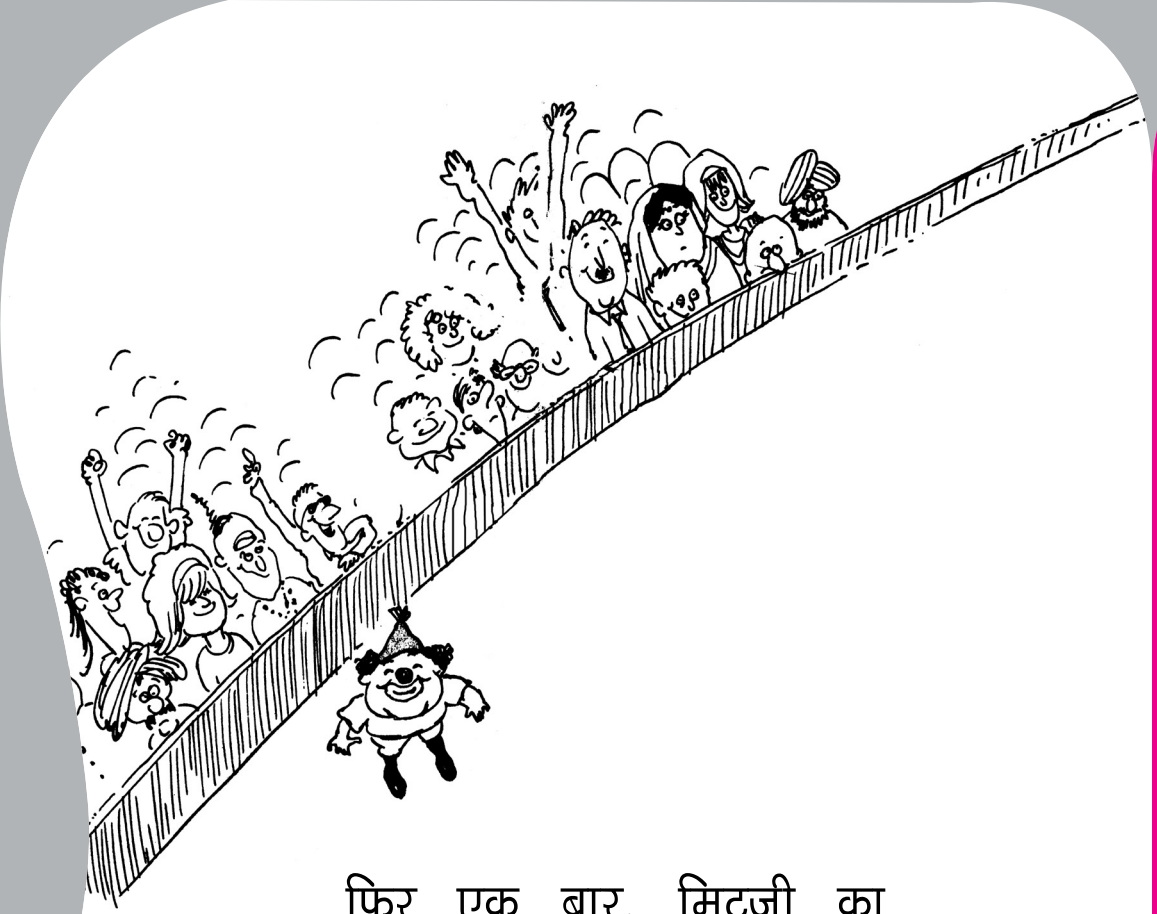

फिर एक बार, मिट्ज़ी का दोस्त उसे सर्कस ले गया। वहाँ उसे कलाबाज़ों को झूलों पर झूलते देखकर, उसे ऐसा लगा,

मानो शहतूत के पत्तों पर झीनी-झीनी धूप नाच रही हो। जैसे उसके मित्र का संगीत साकार हो गया हो!

"काश ...!" मिट्ज़ी ने सोचा, "मैं भी ऐसा कर पाती!" और उसी दिन से, उसने अपने मित्र की धुनों पर, एक डाल से दूसरी डाल तक, कलाबाज़ी का अभ्यास करना शुरू कर दिया।

कई बार वह गिरी भी, लेकिन रुकी नहीं!

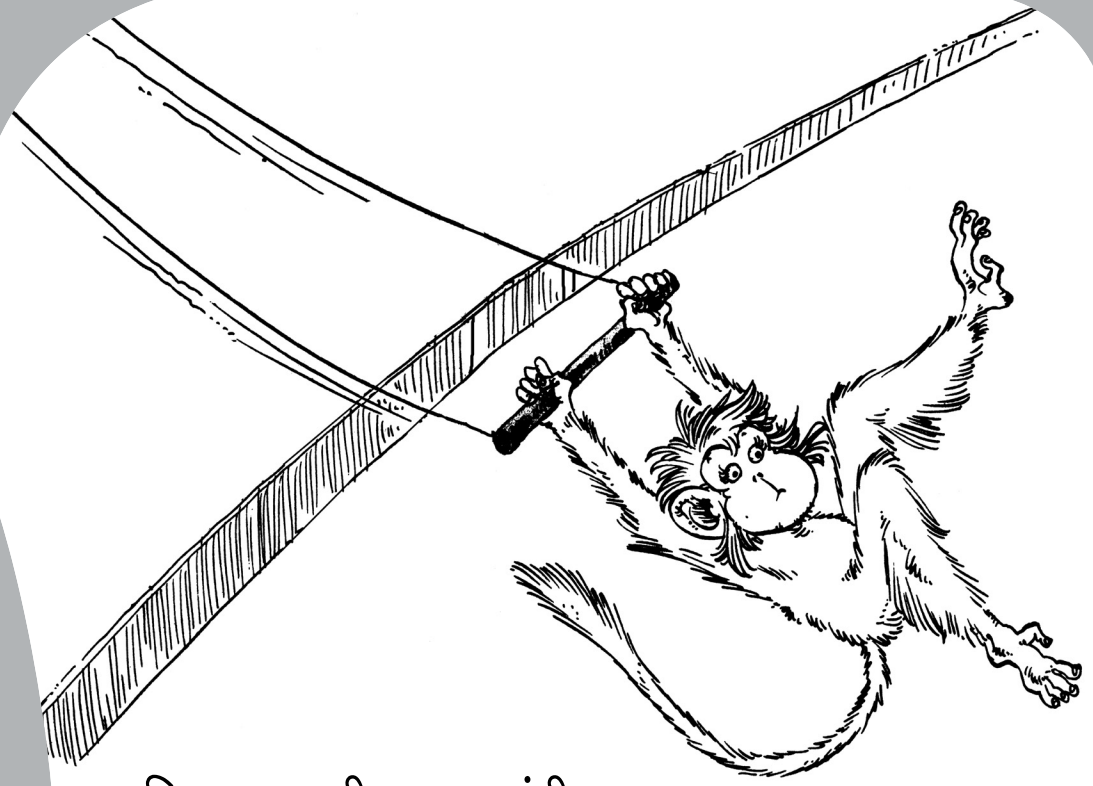

दिसम्बर की एक ठंडी रात को, सर्कस का तम्बू ख़ाली और सुनसान पड़ा था।

मिट्ज़ी ने वहाँ देर तक अभ्यास किया और फिर वहीं, छत के पास रखे कलाबाज़ों के बक्से पर, थक कर सो गई।

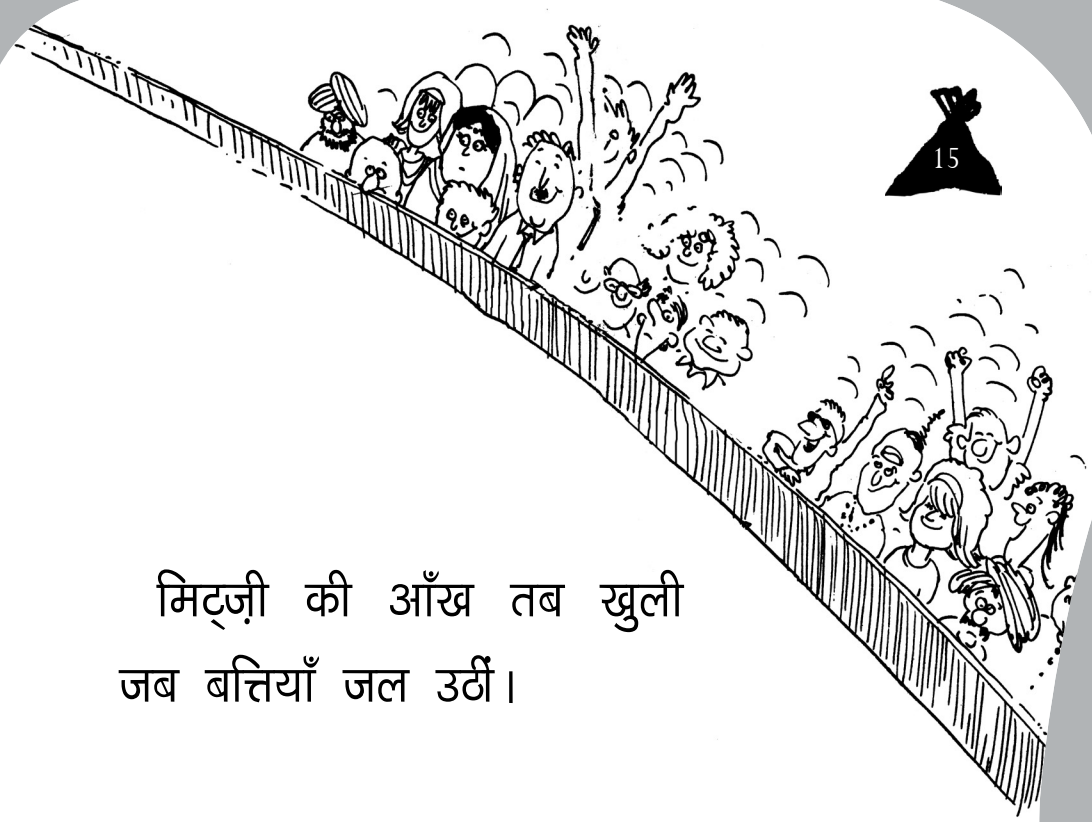

मिट्ज़ी की आँख तब खुली जब बत्तियाँ जल उठीं।

फिर नींद में ही मिट्ज़ी ने झूले को पकड़ा और सरसराती हुई हवा में झूल गई!

“बहुत खूब!” लोग पुकार उठे, “अरे वाह!”

जैसे ही शो समाप्त हुआ, मिनमिनी सर्कस का रिंग मास्टर उसके पास आया।

"बंदरिया, क्या तुम हमारे साथ काम करोगी?" उसने पूछा।

कुछ ही दिनों में, अपने दोस्त के संगीत पर करतब दिखाते-दिखाते, मिट्ज़ी मिनमिनी सर्कस की नामी कलाबाज़ बन गई!

फिर वह दिन भी आया जब सर्कस को वापस जाना था। “तुम किस्मतवाली हो, तुम्हें कुछ भी सामान नहीं बाँधना,” अन्य कलाबाज़ों ने मिट्ज़ी से कहा।

मिट्ज़ी भी कुछ सामान बाँधना चाहती थी। पर क्या उसका दोस्त और शहतूत का पेड़, उसके साथ जा सकेंगे?

मिट्ज़ी का मन उदास हो गया।

अगले ही दिन सर्कस गाँव से चला गया। बस, वही अँधा आदमी वहाँ खड़ा रह गया, उसका डिब्बा आज ख़ाली था।

"मिट्ज़ी", उसने आह भरी,
"तुम्हारी बहुत याद आएगी,
मेरी नन्ही दोस्त!"

अचानक, उसने लोगों को ताली बजाते और चिल्लाते हुए सुना और फिर ...

... टिंक ! टिंक ! बारिश की बूँदों की तरह सिक्के उसके डिब्बे में बरसने लगे।

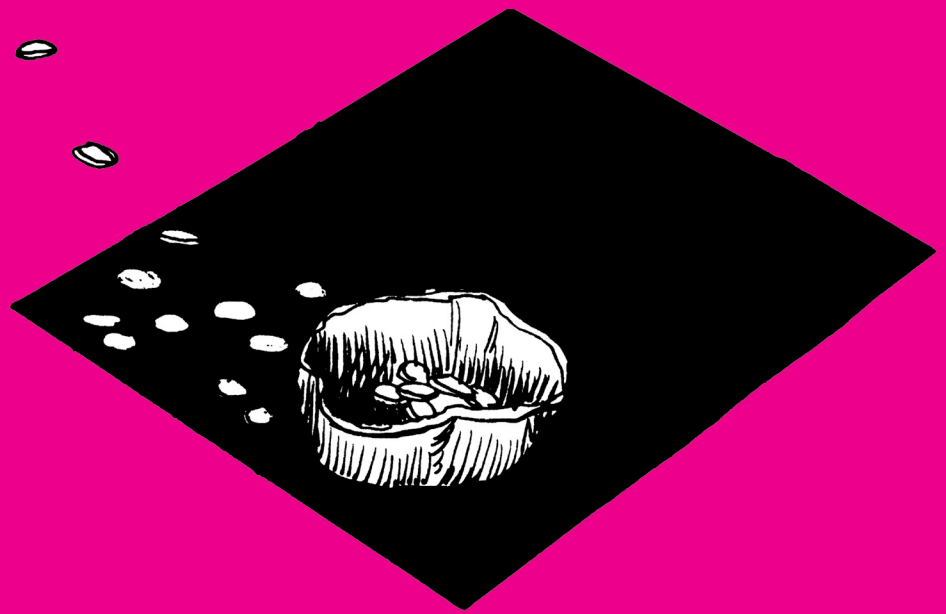

“क्या सर्कस लौट आया है ?” किसी ने पूछा।

“अरे नहीं,” कोई बोला, “यह तो वह प्यारी-सी बंदरिया शहतूत के पेड़ पर करतब दिखा रही है!”

बूझो तो जानें!

मिट्ज़ी की तरह हँसते-खेलते और फुर्तीले रहना है तो, संतुलित भोजन में क्या-क्या खाना है, आगे दी गई पहेली में बूझो।

दाएँ से बाएँ

1. हम देते हैं तुम्हें शक्ति दिन-भर की। हम मिलते हैं रोटी, ब्रेड, चावल जैसे खाने में।
4. हमें ढूँढ़ों फलों और सब्जियों में।
6. हर रोज़ आधा घंटा करने से बनोगे तुम चुस्त और तंदुरुस्त!

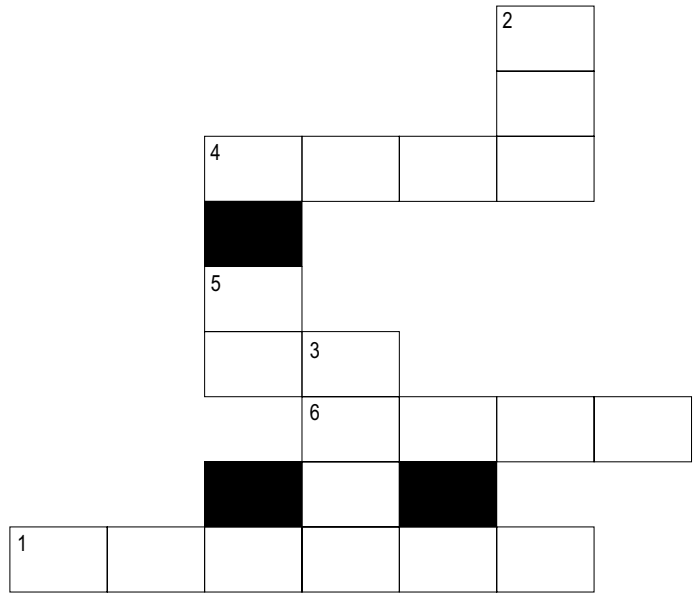

ऊपर से नीचे

2. हमें खाने से तुम होगे लंबे और बलशाली। हम मिलेंगे अंड़ों, मूँगफली और काजू, बादाम, सेम, लोबिया आदि में।
3. हमें अधिक मात्रा में न खाना! हम तुम्हें मोटा कर देंगे।

पौष्टिक आहार

ताज़े फल

सूप, जूस, लस्सी

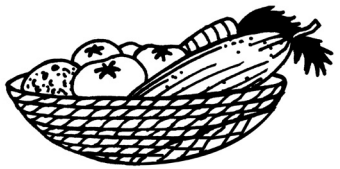

ताज़ी सब्जियाँ

चित्राँकनः अतनु रॉय
एवं सुजाता सिंह

5. तुम्हें इसे रोज़ 8–10 गिलास पीना चाहिए, पर पीना साफ़!

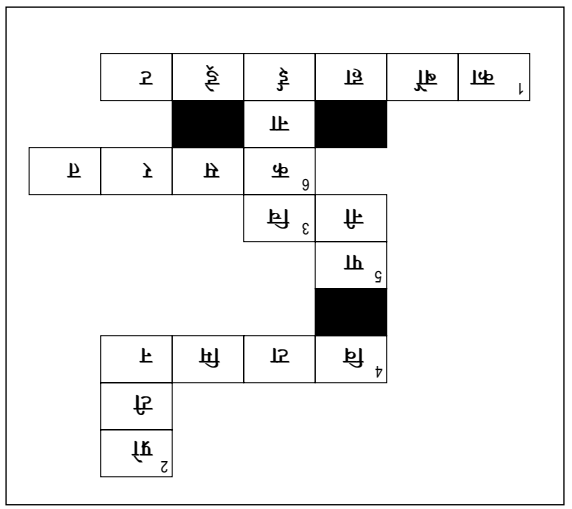

उत्तर:

ये शब्द अब हैं दोस्त हमारे

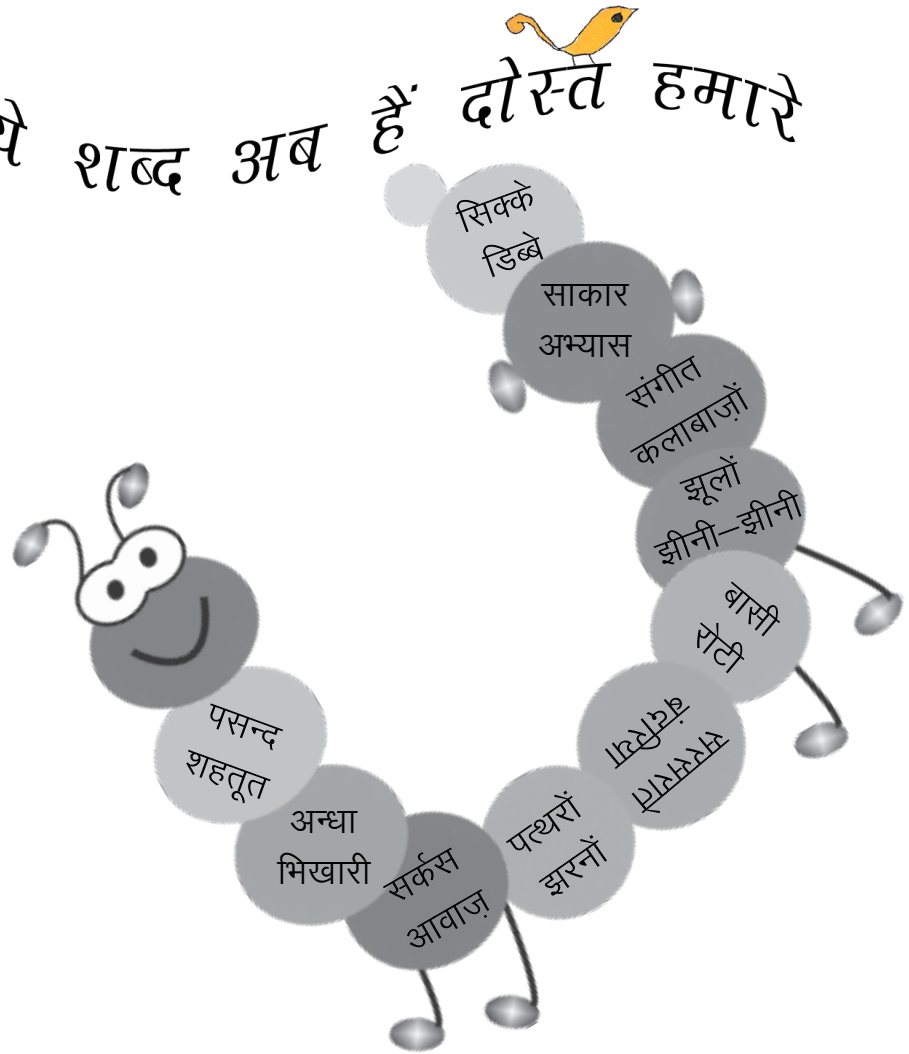

dkoj Mh को लिखने का षौक बहुत ही कम आयु से है – इन्होंने अपनी पहली कहानी चार साल की उम्र में लाल रंग के क्रेयान से अपने घर की दीवार पर लिखी थी। इनके कुछ अन्य षौक हैं हिन्दुस्तानी षास्त्रीय संगीत सुनना, किताबें पढ़ना और अंधेरी रात में तारों को ताकना।

vru| jk; ने सौ से भी अधिक बच्चों की किताबों के लिए चित्रांकन किया है। उन्होंने अपना अधिकतर कल्पना कौशल बाल साहित्य को समर्पित किया है। फिर यह कोई अचम्भे का कारण नहीं है कि अतनु, जो कि इंडिया टुडे में राजनैतिक कार्टूनिस्ट रह चुके हैं, को बच्चों की चित्रकारी के लिए कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है जैसे चिल्ड्रन्स चॉइस अवॉर्ड फ़ॉर बुक इलस्ट्रेशन और इब्बी सर्टिफ़िकेट ऑफ़ ऑनर फ़ॉर इलस्ट्रेशन।

सीरीज संपादिका: गीता धर्मराजन

कथा नियमित रूप से पेड़ लगाती है उस लकड़ी के बदले, जिससे हमारी किताबों को छापने का कागज़ बनता है।
इस किताब की बिक्री से मिली राशि का 10% अल्पाधिकारी बच्चों के एक स्कूल, कथाशाला को दिया जाएगा।

मेरी अगली कहानी

अगड़म, बगड़म, तिगड़म हम
झट-पट सीखें अक्षर हम।
200 दोस्त बनें कम से कम
तिगड़म अगड़म बगड़म हम!

KATHA

यह कहानी “तमाशा” में सन् 1991 में प्रकाशित हो चुकी है
दूसरा संस्करण 2007, तीसरा संस्करण 2009, चौथा संस्करण 2010, पाँचवाँ संस्करण 2010, छठवाँ संस्करण 2013

कृति स्वामित्व © गीता धर्मराजन
स्वत्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशक की आज्ञा के बिना इस किताब के किसी भी भाग को छापना अथवा अन्य किसी पुनः प्रयोग विधि के रूप में प्रतिकृति या इस्तेमाल वर्जित है।

एजियन ऑफ्सेट, नोएडा (उत्तर प्रदेश) द्वारा मुद्रित
ISBN 978-81-89020-87-3
संपादकीय टीम: वैशाली माथुर, युक्ति बैनर्जी

कथा एक पंजीकृत अलाभकारी संस्था है। कथा का मुख्य उद्देश्य है बच्चों और बड़ों में पढ़ने में रुचि एवं इससे मिलने वाली खुशी को बढ़ावा देना। कथा स्कूल दिल्ली के बस्ती, मोहल्लों और अरुणाचल प्रदेश के आदिवासी क्षेत्रों में स्थित है।

ए 3 सर्वोदय एनक्लेव, श्री औरोबिन्दो मार्ग
नई दिल्ली–110017
दूरभाष: 4141 6600, 4182 9998, फैक्स: 2651 4373
ई मेल: ilr@katha.org, इंटरनेट: http://www.katha.org

प्रोडक्शन टीम: प्रकाश आचार्य, यशपाल बिष्ट, विक्रम कुमार

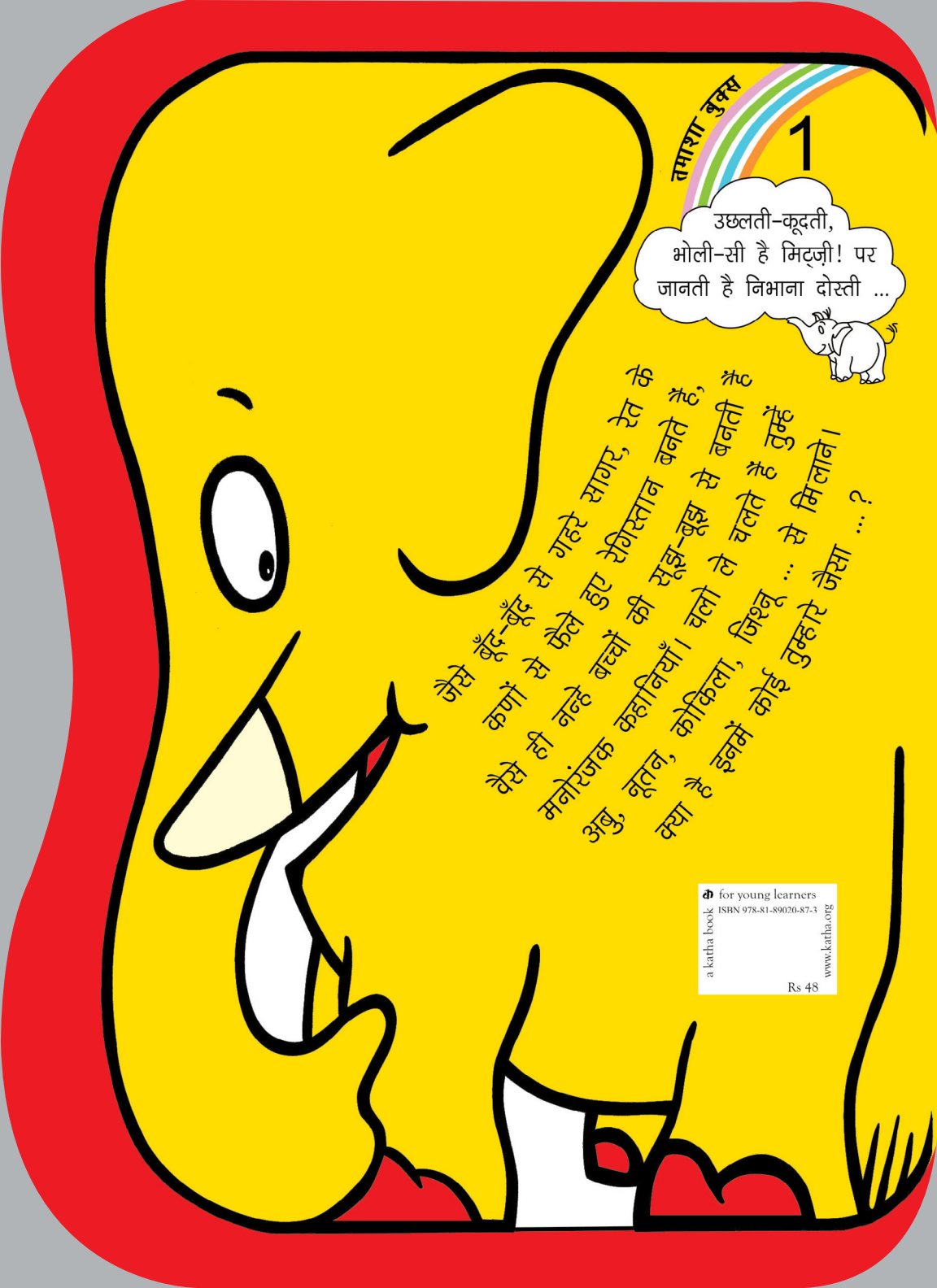

जैसे बूँद-बूँद से गहरे सागर, रेत के
कणों से फैले हुए रेगिस्तान बनते हैं,
वैसे ही नन्हे बच्चों की सूझ-बूझ से बनती हैं
मनोरंजक कहानियाँ। चलो ले चलते हैं तुम्हें
अबु, नूतन, कोकिला, जिश्नू ... से मिलाने।
क्या है इनमें कोई तुम्हारे जैसा ...?

a katha book for young learners
ISBN 978-81-89020-87-3
www.katha.org
Rs 48